RNI No. MPHIN/2018/76422

बेबाकी के साथ... सच

माही की गूंज

प्रेरणा स्रोत
स्व. श्री यशवंतजी घोड़ावत

Www.mahikigunj.in, Email-mahikigunj@gmail.com

वर्ष - 3 | स्वतंत्रता दिवस पर विशेषांक | खवासा, रविवार 15 अगस्त 2021 | पृष्ठ-8, मूल्य -5 रुपए

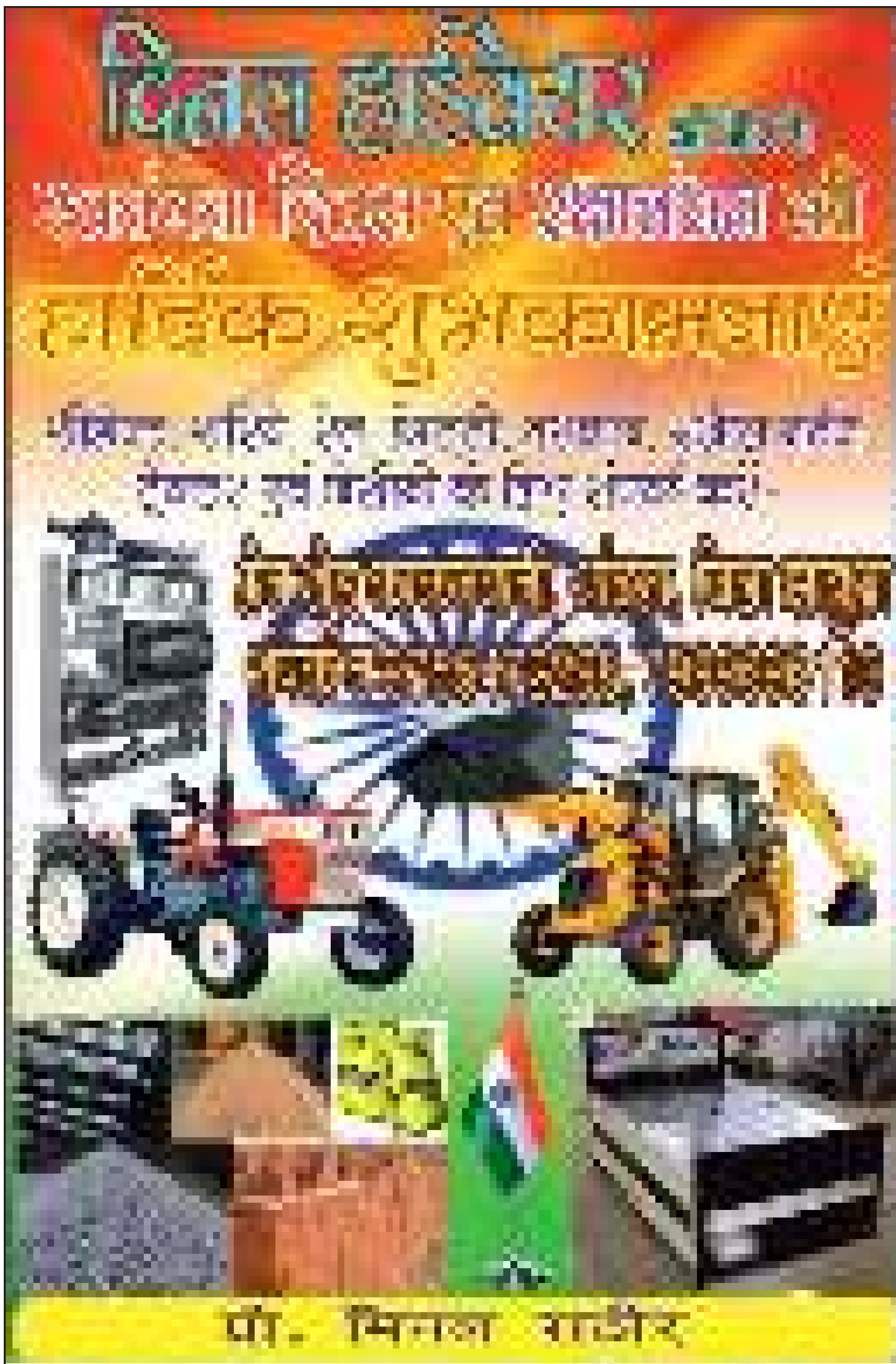
हार्दिक शुभकामनाएं

BAJAJ

हार्दिक शुभकामनाएं

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

RNI No. MPHIN/2018/76422

बेबाकी के साथ.. सच

माही की गूंज

Www.mahikigunj.in, Email-mahikigunj@gmail.com

कोरोना से आजादी की दरकार

माही की गूंज, झाबुआ। संजय भटेवरा

आजादी के बाद अब तक की सबसे बड़ी महामारी कोविड-19 ने देश के नागरिकों को न केवल शारीरिक, मानसिक और आर्थिक रूप से झकझोर कर रख दिया है। आज जब हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे है। तो हमें आर्थिक और शारीरिक रूप से कमजोर करने वाले कोविड-19 के विरुद्ध भी निर्णायक जंग लड़नी होगी। 1947 के पूर्व जहां हमारे देश के वीर क्रांतिकारियों ने जिस प्रकार अपनी जान की बाजी लगाकर फिरंगियों से लोहा लेकर उन्हें देश से भगाया था। ठीक उसी प्रकार वर्तमान में हमारे देश के कोरोना वारियर्स (डॉक्टर, पुलिस, स्वास्थ्य कर्मी व सफाई कर्मी) इस अदृश्य वायरस के खिलाफ अपनी जान पर खेलकर मरीजों का इलाज कर रहे हैं। वहीं हमारे देश के वैज्ञानिक जिन्होंने एक से अधिक वैक्सीन की खोज कर इस जंग के खिलाफ हमें निर्णायक हथियार (वैक्सीन) तैयार करके दी है।

सही मायने में देखा जाए तो आजादी की लड़ाई और वायरस के खिलाफ लड़ाई दोनों में बहुत कुछ समानता है। अंग्रेजों ने जहां हम पर कई प्रकार के जुल्म किए थे। हमारी आजादी छीन ली थी। हमारी अभिव्यक्ति छीन ली थी। ठीक उसी प्रकार इस अदृश्य वायरस ने भी हमारी आज़ादी छीनकर हम पर कई पाबंदियां लगा दी है। जिससे न केवल हमारा देश बल्कि पूरा विश्व इसकी चपेट में है। जिस प्रकार स्वतंत्रता आंदोलन में देश के वीर सपूतों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया था। ठीक उसी प्रकार इस वक्त हमारी बारी है, कि हम इस संकट के दौर में न केवल सरकारी गाईडलाइन का पालन करें व वैक्सीनेशन के संबंध में फेलाई जारी रही अफवाहों को विराम देकर लोगों को इसके लिए प्रेरित करें। क्योंकि हम खुद वैक्सीन लेकर न केवल खुद को सुरक्षित कर रहे है, वरन हमारे संपर्क में आने वाले हर व्यक्ति को सुरक्षित कर देश के लिए भी कार्य कर रहे हैं।

कोरोना संक्रमण को रोकने के के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदम और देश की जनता के धैर्य को आज पूरा विश्व उदाहरण के तौर पर देख रहा है। संक्रमण काल की पहली व दूसरी लहर ने हमारे देश की अर्थव्यवस्था को तहस-नहस कर दिया है। कई युवा बेरोजगार हो गए हैं, कई लोगों के काम धंधे चौपट हो चुके हैं। इसके बावजूद कोरोना की तीसरी लहर हमें लगाकर आशांकित कर रही है। वही सरकार द्वारा जारी टीकाकरण का आंकड़ा भी 50 करोड़ के पार पहुंच चुका है। जो कि एक बड़ी उपलब्धि है। इतने कम समय में इतना बड़ा टारगेट करना निश्चित रूप से गर्व की बात हो सकती है। इसके लिए हमारा पैरामेडिकल स्टाफ बधाई का हकदार है। लेकिन अभी मंजिल दूर है हमें न केवल तीसरी लहर व कोरोना का संपूर्ण विनाश करना होगा ताकि आम जन -जीवन एक बार फिर सामान्य हो सके।

सही मायने में आजादी के अमृत महोत्सव का असली आनंद तभी आएगा जब बच्चों की मुस्कराहटों के साथ स्कूल खुलेंगे, जन-जीवन सामान्य होगा और देश एक बार फिर पूरी रफ्तार के साथ दौड़ने लगेगा। निश्चित रूप से आजादी का ये जश्न बच्चों के बिना अधूरा है। लेकिन उत्साह और जोश की भी कोई कमी नहीं है। जिस प्रकार हमने आजादी की जंग जीती थी उसी प्रकार हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि, इस अदृश्य शत्रु के खिलाफ हम मानवता की जंग में अवश्य विजय होंगे।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ आप सभी को स्वतंत्रता दिवस की माही की गूंज परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं...

जय हिंद... जय भारत...

जीतेगा भारत... हारेगा कोरोना...

अद्भुतः जब ध्वजारोहण करेंगे पीएम नरेन्द्र मोदी, आसमां से बरसेंगे फूल

लाल किले पर बनी अटूट दीवार, मल्टी लेयर सिक्योरिटी में कवर राजधानी

नई दिल्ली, एजेंसी। स्वतंत्रता दिवस के लिए इस वर्ष लाल किले के काफी कड़े सुरक्षा इंतजाम किए गए है। लाल किले से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज को 75 वें स्वतंत्रता दिवस के मौके पर राष्ट्र को संबोधित करेंगे। लाल किले पर मल्टी लेयर सिक्योरिटी की व्यवस्था की गई है। सुरक्षा के लिए एंट्री गेट पर कंटेनर की दीवार, एनएसजी स्नाइपर्स, स्वाट कमांडो, ऊंची इमारतों पर शार्पशूटर सहित सुरक्षा रिंग को किले के चारों ओर रखा गया है।

स्वतंत्रता दिवस की सुरक्षा एडवाइजरी को ध्यान में रखते हुए पुलिस और केंद्रीय सुरक्षा एजेंसियों ने कड़े इंतजाम किए हैं। लाल किले के एंट्री गेट पर अवरोधक के रूप में कई मंजिला ऊंचे कंटेनर रखे गए है, वहीं लाल किले पर एंटी ड्रोन रडार सिस्टम लगाया गया है।

हवाई हमले के अलर्ट के मद्देनजर हुए इस बार एंटी एयर क्राफ्ट मशीन गन लगाई हैं। लाल किले और इसके आस-पास पांच हजार से ज्यादा जवानों की तैनाती के साथ 300 से ज्यादा सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं। वहीं स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम में सुरक्षा के लिए पांच हजार से ज्यादा जवान तैनात रहेंगे।

देश में इस बार स्वतंत्रता दिवस हर वर्ष से कुछ खास और अलग रहने वाला है। स्वतंत्रता दिवस समारोह में पहली बार ऐसा होने जा रहा है कि, जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जैसे ही राष्ट्रीय ध्वज फहराएंगे वैसे ही आसमान से दो हेलीकॉप्टरों द्वारा फूलों की वर्षा की जाएगी। प्रधानमंत्री के आगमन पर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, रक्षा राज्य मंत्री अजय भट्ट और रक्षा सचिव डॉ. अजय कुमार उनकी अगवानी करेंगे। रक्षा सचिव, दिल्ली क्षेत्र के जनरल ऑफिसर कमांडिंग (जीओसी), लेफ्टिनेंट जनरल विजय कुमार मिश्रा, एवीएसएम का प्रधानमंत्री से परिचय कराएंगे।

सीएम भोपाल में तो बाकी मंत्री जिलों में करेंगे ध्वजारोहण

भोपाल। स्वतंत्रता दिवस की 75 वीं वर्षगांठ के कार्यक्रम में मुख्यमंत्री शिवराज सिह चौहान भोपाल में ध्वजारोहण करेंगे, वहीं गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा इंदौर और विधानसभा अध्यक्ष गिरीश गौतम अपने गृह क्षेत्र रीवा में ध्वजारोहण करेंगे। इसके साथ ही सभी जिलों के मुख्यालयों पर मंत्री और कलेक्टर ध्वजारोहण करेंगे। इस आयोजन में पुलिसकर्मियों, समेत स्वतंत्रता सेनानियों का सम्मान भी किया जाएगा। भोपाल के लाल परेड ग्राउंड स्थित मोतीलाल नेहरू स्टेडियम में स्वतंत्रता दिवस की परेड होगी। प्रदेश के करीब 110 पुलिस कर्मियों समेत 11 स्वतंत्रता सेनानी और 81 लोकतंत्र सेनानियों का भी सम्मान किया जाएगा। बारिश से बचाव, समेत वाहनों के आने-जाने के रास्ते, समेत वीवीआईपी और आम जनता के बैठने के लिए व्यवस्था की गई है। फुल ड्रेस रिहर्सल में डीजीपी विवेक जौहरी, अपर मुख्य सचिव विनोद कुमार, कमिश्नर कवींद्र कियावत, एडीजीपी ए साई मनोहर, कलेक्टर अविनाश लवानिया, डीआईजी इरशाद वली मौजूद थे। स्वतंत्रता दिवस के मौके पर इस बार स्कूली बच्चों के रंगारंग कार्यक्रम नहीं हो पाएंगे। इस कार्यक्रम में स्कूली बच्चों को नहीं बुलाया गया है।

जिले में साधारण तरीके से मनेगा 75 वां स्वतंत्रता दिवस, प्रभारी मंत्री इंदरसिंह परमार करेंगे ध्वजारोहण

स्कूली बच्चें समारोह में नहीं होंगे शामिल

माही की गूंज, झाबुआ।

आज स्वतंत्रता दिवस जिले में साधारण तरीके से मनाया जाएगा। कोरोना संक्रमण को देखते हुए इस वर्ष भी यह आयोजन गाइड लाइन का पालन करते हुए होगा। सुबह 9 बजे जिले के प्रभारी मंत्री इंदरसिंह परमार मुख्य समारोह स्थल डीआरपी लाइन पर ध्वजारोहण करेंगे। लेकिन इस वर्ष भी स्वतंत्रता समारोह आयोजन की रोनक स्कूली बच्चें इस आयोजन में शामिल नहीं हो सकेंगे।

ध्वजारोहण के बाद प्रभारी मंत्री परेड का निरीक्षण करेंगे। जिसके बाद मुख्यमंत्री के संदेश का वाचन करेंगे। 9.22 मिनट पर परेड द्वारा हर्ष 9.22 पर परेड द्वारा हर्ष फायर एवं जयघोष, 9.25 पर परेड द्वारा मार्च पास्ट, 9.30 परेड कमाण्डरों का परिचय, 9.37 आदिवासी नृत्य, 9.45 पर शुभारंभ मिशन रोशनी तथा 'अ' से अक्षर अभियान, 9.50 बजे पुरस्कार वितरण होगा।

सांस्कृतिक कार्यक्रम नही होंगे

कोरोना संक्रमण को देखते हुए इस वर्ष भी स्कूली बच्चों को इस आयोजन से दूर रखा गया है। संक्रमण के कारण ही स्कूलें भी बंद है। जिसके चलते स्वतंत्रता समारोह में किसी प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति नहीं होगी। समारोह में शामिल होने वाले गणमान्य नागरिकों को भी कोरोना गाइडलाइन का पालन करना अनिवार्य होगा। इस बार समारोह में शामिल होने वाली झांकियां भी नदारद ही दिखाई देंगी। कुल मिलाकर कोरोना संक्रमण को मद्देनजर रखते हुए स्वतंत्रता दिवस का यह आयोजन बड़े ही साधारण तरीके से आयोजित होगा।

शहर की कई शासकीय व अशासकीय संस्थाएं भी करेंगी ध्वजारोहण

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर शहर की कई सामाजिक, धार्मिक संस्थाएं भी ध्वजारोहण करेंगी। इसके अलावा लगभग सभी शासकीय कार्यालयों पर झंडावंदन किया जाएगा। शहर के सीनियर सीटीजन पेंशनर कार्यालय पर ध्वजारोहण किया जाएगा। सकल व्यापारी संघ द्वारा शहर के हृदय स्थल राजवाड़ा पर भी ध्वजारोहण कार्यक्रम आयोजित होगा। लेकिन इस बार संक्रमण के चलते व्यापारी संघ द्वारा निकाली जाने वाली प्रभात फैरी को निरस्त कर दिया गया है। इसी तारतम्य में कई संस्थाओं ने स्वतंत्रता दिवस व ध्वजारोहण को लेकर आमंत्रण पत्रिकाएं भी शहर में बंटवाई है।

कलेक्टर तथा पुलिस अधीक्षक ने लिया समारोह स्थल का जायजा

समारोह स्थल पर पूर्ण हुई तैयारियां

स्वतंत्रता दिवस के मुख्य आयोजन स्थल पर प्रशासनिक अमले द्वारा संपूर्ण तैयारियां पूर्ण कर ली गई है। इसके पहले 13 अगस्त को समारोह स्थल पर आयोजन को लेकर रिहर्सल की गई। पुलिस जवानों द्वारा परेड का अभ्यास किया गया। कलेक्टर तथा पुलिस अधीक्षक ने समारोह स्थल का निरीक्षण भी किया और कमियों को लेकर अधिकारियों को दिशा निर्देश भी दिए।

शैक्षणिक संस्थाओं में होंगे वर्चुअल कार्यक्रम

शहर की शैक्षणिक संस्थाओं में भी बच्चों को नहीं बुलाया जाएगा। संस्था के प्रमुखों व स्टाफ के लोगों द्वारा ध्वजारोहण किया जाएगा। स्कूलों पर भी किसी तरह के सांस्कृति कार्यक्रम नहीं होंगे। मगर कई संस्थाएं वर्चुअल आयोजन करेंगी। संस्थाओं के शिक्षक बच्चों से विडियो एप के जरिए जुड़ेंगे और कई तरह की गतिविधियों व प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। जिसमें रंगोली, फैंसी ड्रेस, वाद-विवाद प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता आदि कई तरह के आयोजन होंगे।

समारोह स्थल पर हुआ परेड का पूर्वाभ्यास।

संपादकीय

अशोभनीयः गरीमा तार-तार, लोकतंत्र पर वार

यूं तो संसद का हालिया मानसून सत्र ही पूरी तरह हंगामे की भेंट चढ़ गया, लेकिन सत्र के अंतिम दिन उच्च सदन में जो निम्न कार्य हुआ, उससे सदन की गरिमा को गहरे तक आघात पहुंचा। देश चलाने वाले और कानून बनाने वाले यदि ऐसा अराजक व्यवहार करेंगे तो लोकतंत्र की गरिमा कहां बचेगी? चुनावी जंग के दौरान व सड़कों पर होने वाला विरोध व संघर्ष यदि संसद के भीतर होगा तो लोकतंत्र की मर्यादाएं

तार-तार होंगी ही। हालांकि, सत्ता पक्ष और विपक्ष सत्र के अंतिम दिन के घटनाक्रम के लिए एक-दूसरे पर दोष मढ़ रहे हैं, लेकिन हंगामे के वायरल हुए वीडियो हकीकत बयां कर रहे हैं, जिसमें महिला सांसद महिला मार्शल पर हमलावर नजर आ रही है। सत्ता पक्ष असंसदीय व्यवहार के लिये विपक्षी दलों को दोषी बता रहा है तो विपक्ष सरकार पर मार्शल लाकर सांसदों का अपमान करने की बात कर रहा है। जिसके विरोध में विपक्ष ने प्रदर्शन किया तो सत्ता पक्ष के मंत्रियों ने प्रेस कॉनफ्रेंस करके विपक्ष पर आरोप दागे।

बहरहाल, इस हंगामे को देश और दुनिया ने देखा। अब हम किस तरह दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र का गुणगान करेंगे। सवाल स्वाभाविक है कि क्या राज्यसभा में हुए हंगामे की हकीकत देश जान सकेगा? क्या इस अप्रिय घटनाक्रम की जांच होगी? यह भी कि क्या वह जांच राजनीतिक दुराग्रहों से मुक्त हो सकेगी? ऐसे तमाम यक्ष प्रश्न हमारे सामने जवाब की प्रतीक्षा में हैं। यह दुर्भाग्यपूर्ण ही है कि, जब देश महामारी के दंश से आहत है तब देश का राजनीतिक नेतृत्व लोकतंत्र के प्रहसन में लिप्त रहा। हंगामे की भेंट चढ़े सत्र के दौरान लोकसभा में महज 22 फीसदी काम का होना बताता है कि, हमारे चुने सांसदों की लोकतंत्र के लिए प्रतिबद्धताएं क्या हैं? ऐसा लगा जैसे सुनियोजित ढंग से कामकाज को अवरुद्ध करने का प्रयास किया गया। विपक्ष आरोप लगा रहा है कि पहली बार संसदीय इतिहास में राज्यसभा की कार्रवाई के दौरान मार्शलों का सहारा लिया गया। लेकिन सवाल यह भी है कि, नियमावली को सभापति की ओर फेंकते और मेजों पर उछलकूद करते सांसदों को पहले भी देखा गया?

नि:संदेह, संसद स्वस्थ बहस करने, सवाल पूछने और सरकार के जनविरोधी फैसलों का विरोध करने का स्थान है। लेकिन इसकी अभिव्यक्ति जनप्रतिनिधियों के गरिमामय व्यवहार तथा लोकतांत्रिक गरिमा के अनुरूप ही होनी चाहिए। सत्ता पक्ष इस घटनाक्रम को विपक्ष के दिवालिएपन का प्रतीक बता रहा है तो विपक्ष लोकतंत्र की हत्या का जुमला दोहरा रहा है। लेकिन क्या नेता व राजनीतिक दल अपने सांसदों को गरिमामय व्यवहार के लिए प्रेरित कर सकते हैं? यही वजह है कि, संसद में मानसून सत्र निर्धारित समय से दो दिन पहले की समाप्त करना पड़ा है। लेकिन हकीकत यह भी है कि सत्ता पक्ष की ओर से भी उस जिम्मेदारी का परिचय नहीं दिया गया, जो विवाद टालने के लिए जरूरी था। अब चाहे तीन विवादास्पद कृषि कानूनों का मसला हो, पेगासस मामले की जांच हो या महंगाई और बेरोजगारी का मुद्दा हो, सरकार द्वारा इन्हें संबोधित ही नहीं किया गया। जाहिर है ऐसी हताशा में विपक्ष का आक्रामक होना स्वाभाविक ही था। लेकिन इस प्रतिरोध का संयमित और मर्यादित होना पहली शर्त ही है। देश का जनमानस पूछ सकता है कि, संसद की कार्रवाई में करोड़ों रुपए खर्च होने के बावजूद सिर्फ बाइस फीसदी ही काम क्यों हुआ? यह भी कि उच्च सदन, जिसे अपनी गरिमा व गंभीर व्यवहार के लिए जाना जाता है, वहां सभापति को रुंधे गले से सदन क्यों संबोधित करना पड़ा? क्यों सदन की शुचिता भंग हुई है? सवाल यह है कि, देश की नई पीढ़ी इन माननीयों से क्या प्रेरणा लेगी? क्या कल वे भी सार्वजनिक जीवन में ऐसा व्यवहार नहीं करेंगे?

यह विडंबना ही है कि, जब देश में कोरोना संक्रमण की दूसरी लहर पूरी तरह खत्म नहीं हुई है, रोज चालीस हजार के करीब नये संक्रमण के मामले सामने आ रहे हैं तथा तीसरी लहर का खतरा लगातार बना हुआ है, तो क्या माननीयों को सदी के इस सबसे बड़े संकट पर गंभीर विमर्श नहीं करना चाहिए था? क्या जनप्रतिनिधियों को राजनीतिक प्रतिबद्धताओं से इतर देश के दर्द का अहसास होता है?

स्वतंत्रता के वास्तविक लक्ष्यों का प्रश्न

स्वतंत्रता का 75वां वर्ष किसी देश के लिए महोत्सव का अवसर होने के साथ आत्मनिरीक्षण का भी समय होता है। भारत के संदर्भ में सबसे महत्वपूर्ण बिंदु यह ध्यान रखने का है कि, 15 अगस्त 1947 अंग्रेजों की दासता से स्वतंत्र होने का दिवस है। भारत के अनेक भागों में अलग-अलग कालखंडों में दासता और मुक्ति की गाथाएं भरी पड़ी हैं। जिनके लिए 15 अगस्त 1947 से भारतीय राष्ट्र का आविर्भाव हुआ या अंग्रेजों ने एक बिखरे हुए भूखंड को राष्ट्र-राज्य में परिणत किया, वे इन 75 वर्षों का मूल्यांकन इसी आधार पर करेंगे कि तब हम क्या थे और आज क्या हैं? इसके समानांतर संस्कृति और दर्शनमूलक वास्तविक भारतीय राष्ट्र की सतत जीविता को समझने वाले की दृष्टि व्यापक होगी।

अंग्रेजों के विरुद्ध स्वतंत्रता संघर्ष का ही निष्पक्षता से विश्लेषण करेंगे तो साफ हो जाएगा कि, ये दो धाराएं उस दौरान भी थीं। 19वीं सदी में खासकर कांग्रेस के आविर्भाव के बाद भी स्वतंत्रता संघर्ष के अंदर ये धाराएं थी। एक पक्ष अगर अपने मूल भारत के लक्ष्य से संघर्ष कर रहा था तो दूसरे का लक्ष्य अंग्रेजों को भगाकर स्वतंत्रता प्राप्त करना था। इन सबका बलिदान एक ही श्रेणी का था, लेकिन दृष्टि और लक्ष्य अलग-अलग थे।

अगर स्वतंत्रता के 75वें वर्ष का मूल्यांकन इस आधार पर करें कि, 15 अगस्त 1947 को अंग्रेज जिस दुरावस्था वाले भारत को छोड़ कर गए थे, उसकी तुलना में आज हम कहां खड़े हैं तो ज्यादातर मानक हमारे अंदर गर्व का अनुभव कराएंगे। आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक, वैज्ञानिक, यातायात, संचार, रक्षा, सुरक्षा, प्रशासन, हर क्षेत्र में हम आज उन पायदानों पर खड़े हैं, जिसकी कल्पना आजादी के समय विश्व तो छोड़िए, स्वयं भारतीयों को नहीं थी। 193 करोड़ रुपए से पहला बजट पेश करने वाला भारत 27 लाख करोड़ के बजट वाला देश बना है तो कल्पना की जा सकती है कि कितनी बड़ी छलांग हमने लगाई है। 1962 में चीन के हाथों अपमानजनक पराजय झेलने वाले देश ने पिछले वर्ष गलवान घाटी में चीनी सैनिकों को जिस ढंग से मुंहतोड़ जवाब दिया, उससे बड़ा उदाहरण एक महत्वपूर्ण रक्षा शक्ति बन जाने का दूसरा नहीं हो सकता। पहले इंदिरा गांधी और फिर अटल बिहारी वाजपेयी ने नाभिकीय परीक्षण करके पूरी दुनिया को चौंका दिया तो नरेंद्र मोदी ने उपग्रहों को नष्ट करने की शक्ति का परीक्षण करके। स्वतंत्रता के समय अंग्रेजों सहित पश्चिमी विद्वानों ने भविष्यवाणी कर दी थी कि, भारत में कभी संसदीय लोकतंत्र सफल नहीं हो सकता। 17 लोकसभा तथा लगातार राज्य विधानसभाओं का सफल आयोजन कर और अपनी एकता-अखंडता बनाए रखकर भारत ने उन सारी भविष्यवाणियों को गलत साबित कर दिया है। वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक दृष्टिकोण से देखें तो भारत एक सफल लोकतंत्र है।

75वें वर्ष में गंभीरता से विचार करना चाहिए कि, क्या हम राजनीतिक मतभेदों को दरकिनार कर देश हित में उस स्थिति में वापस जाने के लिए तैयार हो सकते हैं? ऐसे और भी कई प्रश्न हमारे सामने खड़े हैं। 75वें वर्ष का महामहोत्सव हम सबको भारत के प्रति संपूर्ण रूप से भावुक, संवेदनशील और ज्यादा समर्पित करने की प्रेरणा देने वाला बनना चाहिए।

15 अगस्त 1947 को ही हमारे देश में दो धाराएं साफ दिखीं। एक ओर प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू थे, जिन्होंने विक्टोरियन अंग्रेजी में प्रसिद्ध ट्रस्ट विद डेस्टिनी का भाषण दिया तो दूसरी ओर महात्मा गांधी नोआखाली में थे और उन्होंने स्वतंत्रता दिवस पर कोई वक्तव्य जारी नहीं किया। यह कहा कि, आज से गांधी अंग्रेजी भूल गया है। गांधी जी कहते थे कि, हम स्वतंत्र इसलिए होना चाहते हैं क्योंकि भारत का लक्ष्य अन्य राष्ट्रों से भिन्न है, हमको विश्व को रास्ता दिखाना है। सुभाष चंद्र बोस ने भी कहा था कि, भारत को अन्य देशों की तरह महाशक्ति नहीं, इसे तो एक आदर्श महाशक्ति बनना है।

अवधेश कुमार

75वें वर्ष में हमें शांत और संतुलित होकर विचार करना होगा कि, वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था को धक्का पहुंचाए बगैर कितना और कैसे उन लक्ष्यों को साकार करने का उत्तरदायित्व पूरा किया जा सकता है? भारत राष्ट्र के वास्तविक सपने को साकार करने का लक्ष्य रखने वाले लोगों को उनके विरुद्ध भी अहिंसक आंदोलन करना ही होगा। सौभाग्य से पिछले कुछ वर्षों में इसके प्रति व्यापक जन जागरण हुआ है, भारी संख्या में लोग निस्वार्थ भाव से सक्रिय भी हुए हैं लेकिन इस धारा में अतिवाद, व्यावहारिकता की जगह भावुकता काफी हद तक अज्ञानता का बड़ा पक्ष है। इसे कम करते हुए ज्ञानवान, विवेकशील और भारत के प्रति समर्पित लोगों को काम करना होगा। तभी स्वतंत्रता के वास्तविक सपने को पूरा किया जा सकता है।

आजाद भारत में पाश्चात्य संस्कृति के गुलाम

सैकड़ों वर्षो की अंग्रेजों की गुलामी से भारत को आजाद कराने हजारों भारत माता के सपूतों ने स्वाधीनता आन्दोलन चलाया। जेल, अमानवीय यातनायें सही और शहीद हुए। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के नेतृत्व में चले अहिंसक आन्दोलन ने अंग्रेजों को मजबूर कर दिया कि, भारत को आजाद करना ही होगा। वह शुभ घड़ी 15 अगस्त 1947 को आई जब हम गुलामी की जंजीरों से मुक्त होकर स्वतंत्र भारत के नागरिक गर्व से कहलाएं।

भारतवर्ष को आजाद हुए 74 वर्ष पूर्ण हो गए है। हमने भारत में आजादी के बाद हर क्षेत्र में तीव्र गति से विकास किया है। कृषि, उद्योग, शिक्षा, स्वास्थ्य, संचार क्रांति में अप्रत्याशित प्रगति हुई है। आम आदमी गुलामी के समय निर्धनता में जीवन यापन करता था। अब सम्पन्नता आई है, जीवन स्तर भी बदला है खुशहाली आई है। इन अनेक उपलब्धियों और सफलताओं के बीच अनेक ऐसे प्रश्न हैं जो आजादी देने के साथ ही अंग्रेज हमे दे गये हैं, जिन्हे 74 वर्ष से जोर शोर से जारी रखे हुए हैं। भारत को आजाद करने के साथ ही अंग्रेजों ने देश के टुकड़े कर पाकिस्तान का गठन कर दिया। आज तक भारत और पाकिस्तान के बीच कटुता जारी है। मधुर संबंध बनने की तो हम कल्पना भी नहीं कर सकते। सन 1947 से पूर्व भारत एक था। आजादी के बाद दो भाई एक दूसरे के दुश्मन बने हुए है। पाश्चात्य संस्कृति के बढ़ते प्रभाव से हम हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति से विमुख हो रहे हैं। हम जन्मदिन को पाश्चात्य रीति-रिवाजों के अनुसार बर्थ-डे के रूप में मनाते हुए मोमबत्ती बुझा रहे हैं। मोमबत्ती बुझाकर प्रकाश से अंधकार की ओर जा रहे है। जबकि भारतीय संस्कृति अंधकार से प्रकाश की ओर जाने का पावन संदेश देती है। कहा है तमसो माँ ज्योर्गमय। हम दीप जलाने की भारतीय परंपरा को भूल गए है। भारतीय संस्कृति एवं परंपरा के अनुसार नव वर्ष का शुभारंभ विक्रम संबत, गुड़ी पड़वा या दीपावली के पावन दिन से होता है। भारतीय नव वर्ष को भूलकर एक जनवरी को हम नया वर्ष प्रारंभ कर उत्सव जोर शोर से मना रहे है। 31 दिसंबर को रात्री बारह बजे से जश्न नाच गाने एवं नशे से प्रारंभ होता है जो रात भर चलता है। एक जनवरी को नया वर्ष विदेशों में आता है। साथ ही एक अप्रेल को भी नया वर्ष मनाने की देन अंग्रेजों की है। एक अप्रेल को अंग्रेज ही मूर्ख दिवस मनाते है। दूसरी ओर एक अप्रेल से नया वर्ष प्रारंभ कराकर अंग्रेज हमे मूर्ख बना रहे हैं। भारत में घी, दूध की नदियां बहती थी। चाय अंग्रेज ही भारत में लाये। परिवार में विस्तर से उठते ही चाय चाहिए।आज दूध कोई नहीं पीता चाय पीते है। भारतवासियों को चाय का नशा अंग्रेज ही दे गये हैं। हमारी भारतीय संस्कृति संयुक्त परिवार की थी, मगर दुख है कि पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में आकर संयुक्त परिवार टूट गये हैं।

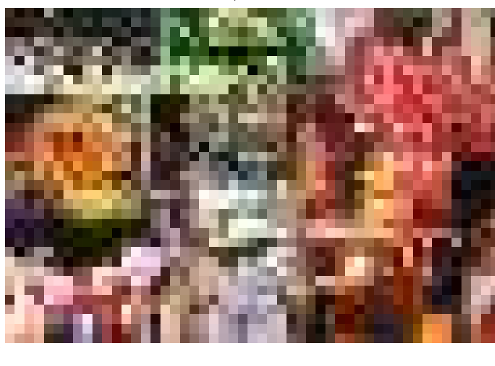

एकल परिवार की परंपरा प्रारंभ हो गई है। वृद्ध, बीमार, असहाय माता-पिता के जीवन के अंतिम समय में बेटा उनका सहारा न बनकर उन्हें उपेक्षित जीवन जीने मजबूर कर रहे हैं। जिन माता- पिता ने जन्म दिया, लालन-पालन किया, पढ़ाया, सुखी जीवन जीने का मंत्र दिया उनको जीवन के अंतिम समय में वृद्धाश्रम में रहने के लिए मजबूर करते है। माता-पिता को वृद्धाश्रम रखने की परंपरा पाश्चात्य संस्कृति की देन है। अपने माता-पिता को हम अंग्रेजों का अनुशरण कर मोम, डेड कह रहे हैं। जीवित पिता को डेड कर रहे हैं और माता को मोम का पुतला बता रहे हैं। माता-पिता का इससे ज्यादा अपमान और क्या होगा। माता-पिता पाश्चात्य संस्कृति में रच पच गये है वे भी अपनी संतान से मोम डेड कहलाने में अपने आप को गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। भारत के संविधान में धर्म निरपेक्षता के सिद्धांत को स्वीकार किया है। सभी धर्मों का समान आदर किया जाता है। इसी सिद्धांत के अनुरूप भारत में ईसाई मिशनरियों द्वारा सारे देश में स्कूल और अस्पताल संचालित हैं। सारे देश में गरीब आदिवासियों को स्वावलंबन का प्रलोभन देकर धर्म परिवर्तन कराया जाता है उन्हें ईसाई बनाया जाता है।

विजय कुमार जैन

स्कूलों में जिन छात्र छात्राओं द्वारा प्रवेश लिया जाता है उन्हें ईसाई धर्म के नियम सिखाये जाते हैं तथा उन्हें इनका अनुशरण करने की शिक्षा दी जाती है। मिशनरी स्कूलों में दीपावली के स्थान पर गुड फ्राइडे मनाया जाता है। जिससे बचपन से ही बच्चे पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में चले जाते हैं। पाश्चात्य संस्कृति का ही प्रभाव है आज लड़का लड़की एकसी ड्रेस पहन रहे है। यह पहचानना कठिन होता है कि, लड़का कौंन है लड़की कौंन है।

प्रेम विवाह, विवाह पूर्व फिल्मांकन कुप्रथाओं से भारतीय संस्कृति तार-तार हो रही है। नई पीढ़ी में बढ़ रहे अपराध पाश्चात्य संस्कृति की ही देन है। हमारा दुर्भाग्य है अंग्रेज तो 74 वर्ष पूर्व भारत को आजाद करके इंग्लैंड चले गए। मगर ऐसी अनेक कुप्रथाएं या आदतें छोड़ गये जिनसे समाज विशेषकर युवा पीढ़ी का नैतिक पतन हो रहा है। विश्व बंदनीय भगवान महाबीर, भगवान बुद्ध, भगवान श्रीराम के देश में आजादी के बाद भी पाश्चात्य संस्कृति का निरंतर बढ़ता प्रभाव चिन्ता का विषय है।

आजादी की 75 वीं वर्षगांठ के दौरान कहां खड़ी है देश की मातृ शक्ति

सोनम लववंशी

इस बार 15 अगस्त को हम देश की आजादी की 75 वीं वर्षगांठ मनाने जा रहें हैं। बेशक यह हम सभी भारतीयों के लिए गर्व की बात है। इस आजाद भारत में महिलाएं भी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलती नजर आ रही है। हमारे देश की महिलाओं ने धरती से लेकर आसमान तक अपने नाम का लोहा मनवाया है। आज ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहां महिलाओं ने अपनी कामयाबी के झंडे बुलंद ना किए हो लेकिन इन सबके बावजूद एक दर्दनाक पहलू यह भी है कि, आज भी पुरुष प्रधान समाज में महिलाओं की अनदेखी की जा रही है। यह एक ऐसा अभिशाप है, जिसे महिलाओं के जन्म के साथ ही उनके मुकद्दर में लिख दिया जाता है। एक अध्ययन से इस बात की जानकारी मिलती है कि, आने वाले 10 वर्षों में लिंग परीक्षण के कारण दुनिया में 50 लाख लड़कियों की कमी हो जाएगी तो वही इस सदी के अंत तक बेटों की चाहत में 2.2 करोड़ बेटियां कम पैदा होने का अनुमान लगाया जा रहा है। मेडिकल जनरल ग्लोबल हेल्थ (बीएमजे) के अध्ययन में यह दावा किया गया है कि, लिंग चयन के दुष्परिणाम के कारण 10 वर्षों में 4.7 मिलियन लड़कियां कम पैदा होगी। अब सवाल यह उठता है कि, 21 वीं सदी में भारत में जहां हम समता और समानता की बात करते है। फिर जन्म से पहले ही लड़का-लड़की का भेद क्यों?

बता दें कि, हमारे संविधान के अनुच्छेद 14 से 18 के बीच कुछ ऐसे प्रावधान हैं कि वे महिलाओं को पुरुषों के समान समानता का अधिकार प्रदान करने की वकालत करते हैं। फिर इन सबके बावजूद महिलाओं की स्वतंत्रता महज कोरी कल्पना ही क्यों प्रतीत होकर रह जाती है। एक दु:खद पहलू यह भी है कि आज भी महिलाओं के प्रति समाज की सोच नहीं बदल पा रही है। जिसका कारण भी कहीं न कहीं समाज पर पितृसत्तात्मक सोच का हावी होना है।

गौरतलब है कि, समाज के सृजन में महिला और पुरुषों का समान योगदान है फिर ऐसी क्या वजह है कि महिलाओं को पुरुषों से कमतर आंका जाता रहा है। जीवन के रंगमंच पर महिला और पुरुष एक ही धुरी के समान चलते हैं। किसी एक के बिना दूसरे के जीवन की कल्पना आधारहीन है। फिर क्यों महिलाओं को पुरुषों के बराबर अधिकार नहीं मिल पाता है? यह सवाल आज भी विचारणीय है। आज महिलाएं घर-गृहस्ती संभालने के साथ-साथ अंतरिक्ष तक अपनी उपस्थिति दर्ज करवा चुकी है। घर परिवार की जिम्मेदारी हो या फिर बात व्यापार क्षेत्र की ही क्यों न हो महिलाओं ने यह साबित कर दिया है कि, वह हर क्षेत्र में परिपूर्ण है। लेकिन नारी सशक्तिकरण की वकालत करते हुए इस बात को भी नकारा नहीं जा सकता है कि, आज जिन क्षेत्रों में पुरुषों का वर्चस्व है उसकी महत्ता को चुनौती देने का कार्य कहीं न कहीं पूर्णरूप से आज़ादी न होने पर भी महिलाएं कर रही हैं। यही वजह है कि, आज भी पुरुष प्रधान समाज महिलाओं को अधिकार देने के पक्ष में कमतर ही नजर आते हैं। महिलाओं के लिए बनाई जा रही तमाम योजनाएं इस बात की गवाह है कि उनके साथ कहीं न कहीं समाज में दोयम दर्जे का व्यवहार किया जा रहा है। बात चाहे घरेलू हिंसा की हो या फिर बाल विवाह या स्त्री शिक्षा की ही क्यों न हो यह हमारे समाज की एक कड़वी हकीकत को बयान करने के लिए काफी है।

कोरोना काल के परिपेक्ष्य में ही बात करें तो बेशक दुनिया का हर वर्ग इससे प्रभावित हुआ हो पर महिलाओं के लिए यह एक अभिशाप बनकर सामने आया है। इस दौरान विश्व भर में महिलाओं को पुरुषों की तुलना में अधिक रोजगार गंवाना पड़ा है। अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ) की रिपोर्ट के मुताबिक साल 2012 से 2019 के बीच में महिला श्रमिक बल की भागीदारी बढ़ी है। लेकिन भारत एकमात्र अपवाद देश रहा है। जहां महिला श्रम शक्ति में गिरावट दर्ज की गई है। ऐसी क्या वजह रही जो भारत की महिलाओं के साथ इस तरह का दुर्व्यवहार किया गया? सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकोनामिक (सीएमआईई) की वर्ष 2019 की रिपोर्ट भी इस बात की ओर इशारा कर रही है कि, पुरुषों की तुलना में महिलाओं को 13.9 प्रतिशत नौकरी का नुकसान उठाना पड़ा। अचरज की बात तो यह है कि, अधिकतर पुरुषों ने कोरोना काल में अपनी नौकरियां वापस प्राप्त कर ली तो वहीं महिलाओं की किस्मत इस मामले में भी ठीक नहीं रही। अधिकतर महिलाओं को कोरोना काल में अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा।

बता दें कि, विश्व आर्थिक संघ ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट 2020 में भी कहा गया है कि, पुरुषों और महिलाओं के वेतन संबंधी समानता में 257 वर्षों का समय लग सकता है। यह रिपोर्ट कहीं न कहीं पुरुषवादी वर्चस्व की ओर इशारा करती है। हाल ही में विश्व बैंक ने भी महिला कारोबार और कानून 2021 को लेकर अपनी रिपोर्ट जारी की है। इस रिपोर्ट में यह साफकहा गया है कि, संपूर्ण दुनिया में केवल 10 देश ही ऐसे हैं। जहां महिलाओं को पूर्ण अधिकार देने की बात कही जा रही या वे देश इसमें सक्षम हैं। भारत इस रिपोर्ट में 190 देशों की सूची में 129 वें स्थान पर है। हमारे देश में आज भी महिलाओं को समान वेतन, मातृत्व, उधमिता और संपत्ति जैसे मामलों में लैंगिक भेदभाव का सामना करना पड़ता है। देश में एक तरफतो महिला स्वतंत्रता और सम्मान की बात की जाती है तो दूसरी ओर महिलाओं पर हिंसा और रेप के ग्राफमें कहीं कोई कमी नजर नहीं आती है। जिस देश में महिलाओं को देवी के समान दर्जा दिया गया है वहां इस तरह का दुर्व्यवहार होना कई सवाल खड़े करता है। सवाल यह भी उठता है कि, महिलाओं से घरेलू सामान खरीदने में तो राय ली जाती है लेकिन जब प्रॉपर्टी में निवेश की बात आती है तो उन्हें बोलने का अधिकार तक नहीं दिया जाता है। यह कैसी विडंबना है जहां परिवार की इज्जत महिलाओं के हाथ में होती है तो वही प्रॉपर्टी के कागजात पुरुषों को दिए जाते हैं?

स्वामी विवेकानंद जी ने एक बात कही थी कि, हमें संगठित होकर जागना होगा तभी महिलाओं के खिलाफ हो रही हिंसा को रोका जा सकता है। महिलाएं आज खेल के मैदान से लेकर देश की राजनीति में अपना योगदान दे रही है। लेकिन यह कड़वा सच ही है कि, आज भी महिलाओं को पुरुषों की तुलना में प्रतिनिधित्व करने का मौका कम ही मिल पाता है। देखा जाए तो हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। आधी आबादी पर भी यही बात लागू होती है। देश की नारियों ने भले ही है नित नए कीर्तिमान हासिल कर लिए हो लेकिन अब भी उनके लिए चुनौतियां कम नहीं है। मेरिट लिस्ट में भले ही हमारे देश की बेटियां नाम रोशन कर रही हैं। बेटों को पीछे छोड़ रहीं हैं, लेकिन जब महिला और पुरुषों के अनुपात की बात आती है तो फर्क साफ नजर आ जाता है। ऐसे में सवाल यही कि ऐसे ही अगर बच्चियों को पैदा होने ही नही दिया जाएगा, फिर कैसे यह समाज आगे बढ़ पाएगा? इस विषय पर मंथन इस बार जरूर होना चाहिए।

भारत कब बनेगा अखंड आर्यावर्त्त?

डॉ. वेद प्रताप वैदिक

भारत की आजादी का 75 वां वर्ष शुरु हो रहा है तो हमारे लिए यह सोचने का सही मौका है कि इतने वर्षों में भारत ने क्या पाया और खोया या क्या नहीं पाया ? सबसे पहली बात तो यह है कि हम दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र हैं। लोकतांत्रिक तो कई देश रहे हैं लेकिन अफ्रीका और एशिया के कई देश ऐसे भी हैं, जहां फौज या किसी गुट या किसी परिवार ने सत्ता पर कब्जा कर लिया है लेकिन भारत का लोकतंत्र अप्रतिहत है, सुरक्षित है। दूसरी बात यह कि, भारत के पड़ौस में लगभग सभी देशों के संविधान कई बार बदल चुके लेकिन भारतीयों को गर्व होना चाहिए कि उनका मूल संविधान ज्यों का त्यों है। उसमें लगभग सवा सौ संशोधन जरुर हुए हैं लेकिन यह उसके लचीलेपन और समयानुरुप होने का प्रमाण है। भारतीय लोकतंत्र की यह भी एक खूबी है कि, यह संघात्मक है। इसके कई प्रांतों में कई पार्टियों का शासन चलता रहता है। केंद्र और राज्यों में परस्पर विरोधी पार्टियों का शासन भी कमोबेश सुचारु रुप से चलता रहता है। भारतीय लोकतंत्र की एक बड़ी उपलब्धि यह भी है कि आजादी के बाद पाकिस्तान या कुछ यूरोपीय देशों की तरह इसके टुकड़े नहीं हुए। यह हुआ कि, कश्मीर, गोआ, सिक्किम जैसे क्षेत्रों का इसके साथ विलय हो गया। इसके अलावा भारत ने परमाणु बम बनाकर खुद को दुनिया की महाशक्तियों की कतार में बिठा लिया। हमारी सैन्य-शक्ति इतनी बढ़ गई कि अब 1962 को दोहराने की हिम्मत कोई राष्ट्र नहीं कर सकता। इसमें शक नहीं कि, आर्थिक क्षेत्र में भी भारत ने काफी उन्नति की है लेकिन इस उन्नति का समान लाभ हमारे वंचित, उपेक्षित, गरीब, ग्रामीण लोगों को हम नहीं दे पाए। अभी भी देश में अमीरी और गरीबी की खाई बहुत गहरी है। देश के करोड़ों लोगों को रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, चिकित्सा और रोजगार न्यूनतम रुप में भी उपलब्ध नहीं है। हमारे नेता नोट और वोट के प्रति समर्पित हैं। भारत को संपन्न और शक्तिशाली बनाने की दृष्टि का उनमें अभाव है। गांधीजी जिसे अंतिम आदमी कहते थे, उसके दुख-दर्दों की तरफउनका ध्यान ही नहीं है। पिछले 74 वर्ष में एक भी सरकार ऐसी नहीं बनी, जो भारत को अंग्रेजों और अंग्रेजी की मानसिक गुलामी से मुक्त करवा देती। पता नहीं भारत नकलची देश की बजाय कब असलची देश बनेगा? भगवान बुद्ध, महावीर स्वामी और महर्षि दयानंद के सपनों का अखंड आर्यावर्त्त खड़ा करने के सोच को साकार करनेवाला कोई नेता भारत में कभी पैदा होगा या नहीं ?

हार्दिक शुभकामनाएं

हार्दिक शुभकामनाएं

मेहर इलेक्ट्रॉनिक
Fino Bank
स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं

सभी जिलावासियों को
स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं

समस्त जिलेवासियों
को
75 वें स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। प्रधान संपादक- संजय भटेवरा, संपादक- धर्मेन्द्र पंचाल । मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई नंबर- एमपीएचआईएन/2018/76422